लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

माँ

✍ बिभावना डेका

जिंदगी की पहली किरण तू,

जिंदगी की पहली पुकार तू,

मेरी जिंदगी की पहली छवि तू,

मेरी आँखों की पहली नज़र तू।

तू ही मेरी ज़न्नत,

तू ही मेरी पहचान,

तू ही मेरी दुनिया,

तू ही मेरी जिंदगी,

बस...तू ही सब माँ।

मेरे दुःख में दुःख मिलाकर रोई है तू,

मेरे सुख में सुख मिलाकर हँसी है तू।

नजाने क्या-क्या त्याग किया है तूने मेरे लिए!

माँ शब्द छोटा है,

पर...नजाने क्या-क्या छिपे हैं इसमें।